ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-4* Issue-1* February- 2019
Innovation The Research Concept

विश्वविद्यालय स्तर पर अध्यापक–शिक्षा एवं अन्य विभागों के शिक्षकों में आधुनिक सम्प्रेषण माध्यमों के प्रति जागरूकता का अध्ययन

अनीता शुक्ला
असिस्टेण्ट प्रोफेसर,
एम0एड0 विभाग,
अभिनव सेवा संस्थान महाविद्यालय,
कानपुर

सारांश

वर्तमान युग वैश्वीकृत है जिसमें तकनीकी के विषय में सम्प्रेषण एवं ज्ञान मुख्य स्रोत है। 21वीं सदी भारतीय शिक्षण व्यवस्था की गुणवत्ता में सुधार के लिए सर्वोत्तम है। यह बदलाव शिक्षा में आधुनिक सम्प्रेषण माध्यमों के प्रयोग के फलस्वरूप सम्भव है। इसका कारण प्रारम्भिक कक्षाओं से लेकर उच्च कक्षाओं, दूरस्थ शिक्षा एवं व्यावसायिक कक्षाओं की शिक्षा में आधुनिक सम्प्रेषण माध्यमों का प्रयोग अनिवार्य बनाया जा रहा है और इसका प्रभाव भी सार्थक आ रहा है। शिक्षा इनका तात्पर्य है शिक्षा के माध्यम का यन्त्रीकरण करना। शिक्षा के क्षेत्र में भी इस वैश्वीकरण के काल में कम्प्यूटर, स्लाइड, प्रोजेक्टर, फिल्म, इण्टरनेट, टेलीकांफ्रेसिंग और मोबाइल लर्निंग आदि शैक्षिक सम्प्रेषण माध्यमों का उपयोग किया जा रहा है।

मुख्य शब्द : सम्प्रेषण तकनीकी।

प्रस्तावना

सम्प्रेषण तकनीकी वह तकनीकी है जो विश्व में किसी भी व्यक्ति के साथ कहीं भी घटित या प्रसंग के विषय में सम्पूर्ण ज्ञान उपलब्ध कराती है। इस तकनीकी ने समाज में शिक्षा की विकास की गति को तेज कर दिया है तथा शैक्षिक संस्थानों में शिक्षण को नई दिशा प्रदान की है। यह तकनीकी कक्षाओं के लिये श्रेष्ठ शैक्षिक सामग्री की उपलब्धता भी सुनिश्चित कर रही है।

सम्प्रेषण तकनीकी से तात्पर्य उन तरीकों से है, जिनके माध्यम से सूचनाओं तथा विचारों का आदान–प्रदान होता है। सम्प्रेषण शब्द दो शब्दों के मेल से बना है। सम+प्रेषण अर्थात् जो समान रूप से प्रेषित किया गया है। अंग्रेजी भाषा में सम्प्रेषण के लिए 'कम्यूनिकेशन' शब्द का प्रयोग होता है। इस शब्द की उत्पत्ति लेटिन भाषा के कम्यूनियस शब्द से मानी जाती है। जिसका अर्थ है जिस बात को में जानता हूं कोई अन्य नहीं जानता है तो वह बात या तथ्यों को दूसरों को सम्प्रेषित कर उसे सामान्य बना देता है। अतः सम्प्रेषण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति परस्पर सामांजस्य के माध्यम से आदान प्रदान करने का प्रयास करता है।

समस्या से सम्बन्धित महत्वपूर्ण अध्ययन

अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता एवं शिक्षण कौशलों की प्रभावशीलता को लेकर कई अध्ययन किये गये। साथ ही शिक्षण कार्य एवं सम्प्रेषण माध्यमों को लेकर भी कई महत्वपूर्ण अध्ययन भारत व अन्य देशों में सम्पन्न हुए, जो आधुनिक एवं परम्परागत दोनों तरह के सम्प्रेषण माध्यमों से सम्बन्धित है। इन अध्ययनों में कई महत्वपूर्ण बिन्दुओं का समावेश है, जो शिक्षण में सम्प्रेषण माध्यमों में अलग अलग पक्षो को उजागर करता है जैसे– विभिन्न सम्प्रेषण माध्यमों का शिक्षण कार्य में महत्वपूर्ण भूमिका, प्रभावशीलता, माध्यमों के प्रति शिक्षकों एवं छात्रों की रूचि एवं अभिवृत्ति, संस्थानों में माध्यमों की उपलब्धता, प्रशिक्षण की आवश्यकता, माध्यमों के प्रति जागरूकता एवं व्यावहारिक प्रयोग इत्यादि।

प्रस्तुत अध्ययन इसी संदर्भ में किया गया एक प्रयास है।

अध्ययन की आवश्यकता

आज तकनीकी संचालित एवं तीव्र परिवर्तित समाज में शिक्षा को नवीनतम ज्ञान से युक्त, आवश्यकतानुसार परिवर्तनशील तथा अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर तुलनीय होना चाहिए। परन्तु 21वीं सदी एवं कम्प्यूटर के इस युग में भावी पीढ़ी जो राष्ट्र की आधारशिला है, को शिक्षित करने वाले शिक्षकों में ही शिक्षा तकनीकी के ज्ञान की कमी होने के कारण भी उच्च शिक्षा की गुणवत्ता पर सवाल उठ खड़ा होता है। अतः वर्तमान समय में अपनी चुनौती पूर्ण भूमिका का निर्वहन करने योग्य शिक्षक के लिये आवश्यक है कि वे सम्प्रेषण एवं तकनीकी कौशलों में निपुण हो। लेकिन सर्वाधिक जिम्मेदारी अध्यापक शिक्षा के शिक्षकों पर है, क्योंकि वे उन शिक्षकों का निर्माण करते हैं जो देश के भावी नागरिकों के निर्माण में अपना योगदान करने वाले हैं। अतः इन्हीं कारणों से शोधकर्ती ने प्रस्तुत समस्या का चयन किया।

समस्या अभिकथन

''विश्वविद्यालय स्तर पर अध्यापक शिक्षा एवं अन्य विभागों के शिक्षकों में आधुनिक सम्प्रेषण माध्यमों के प्रति जागरूकता का अध्ययन।''

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन के अन्तर्गत निम्नांकित उद्देश्य निर्धारित किए गए :–

1. विश्वविद्यालय स्तर पर शिक्षकों में आधुनिक सम्प्रेषण माध्यमों के प्रति जागरूकता स्तर पर अध्ययन करना।
2. विश्वविद्यालय स्तर पर अध्यापक शिक्षा एवं अन्य विभागों के शिक्षकों में आधुनिक सम्प्रेषण माध्यमों के प्रति जागरूकता स्तर में अन्तर का अध्ययन करना।
3. विश्वविद्यालय स्तर पर अध्यापक शिक्षा एवं कला विभाग के शिक्षकों में आधुनिक सम्प्रेषण माध्यमों के प्रति जागरूकता स्तर में अन्तर का अध्ययन करना।
4. विश्वविद्यालय स्तर पर अध्यापक शिक्षा एवं वाणिज्य विभाग के शिक्षकों में आधुनिक सम्प्रेषण माध्यमों के प्रति जागरूकता स्तर में अन्तर का अध्ययन करना।
5. विश्वविद्यालय स्तर पर अध्यापक शिक्षा एवं विज्ञान विभाग के शिक्षकों में आधुनिक सम्प्रेषण माध्यमों के प्रति जागरूकता के स्तर में अन्तर का अध्ययन करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पनायें

अध्ययन के उद्देश्य के अनुसार निम्नांकित शून्य परिकल्नाओं का निर्माण किया गया–

1. विश्वविद्यालय स्तर पर अध्यापक शिक्षा एवं अन्य विभागों में आधुनिक सम्प्रेषण माध्यमों के प्रति जागरूकता स्तर पर कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. विश्वविद्यालय स्तर पर अध्यापक शिक्षा एवं कला विभाग के शिक्षकों में आधुनिक सम्प्रेषण माध्यमों के प्रति जागरूकता स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. विश्वविद्यालय स्तर पर अध्यापक शिक्षा एवं वाणिज्य विभाग के शिक्षकों में आधुनिक सम्प्रेषण माध्यमों के प्रति जागरूकता स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. विश्वविद्यालय स्तर पर अध्यापक शिक्षा एवं विज्ञान विभाग के शिक्षकों में आधुनिक सम्प्रेषण माध्यमों के प्रति जागरूकता स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अध्ययन प्रणाली

विधि

प्रस्तुत अध्ययन का प्रारूप वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि पर आधारित है।

समग्र

प्रस्तुत अध्ययन हेतु समग्र के रूप में कानपुर महानगर के शहरी, कस्बा एवं ग्रामीण क्षेत्रों में संचालित विश्वविद्यालय स्तरीय अध्यापक शिक्षा, कला, विज्ञान, वाणिज्य विभागों में अध्यापनरत् शिक्षा की सम्मिलित किया गया है।

प्रतिदर्श एवं चयन विधि

प्रस्तुत अध्ययन हेतु सम्पूर्ण शिक्षकों से 375 शिक्षकों को उद्देश्यपूर्ण एवं यादृच्छिक चयन विधि से प्रतिदर्श के रूप में चुना गया है।

उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन के आँकड़ों के संकलन हेतु शोधकर्ती ने स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया है–

शिक्षण कार्य में आधुनिक सम्प्रेषण माध्यमों के प्रति शिक्षक जागरूकता प्रश्नावली।

प्रदत्त संग्रह

स्वनिर्मित प्रश्नावली द्वारा शोधकर्ती ने शिक्षकों से व्यक्तिगत सम्पर्क स्थापित कर प्रदत्तों का संग्रह किया है। सांख्यिकी विश्लेषण :– प्रदत्तों के संकलन के पश्चात् इनके विश्लेषण हेतु माध्य माध्यिका, चतुर्थाक–विचलन, प्रतिशत, निर्भरता गुणांक आदि सांख्यिकी का प्रयोग किया गया।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नांकित निष्कर्ष परिलक्षित होते हैं :–

1. विश्वविद्यालय स्तर पर शिक्षकों में आधुनिक सम्प्रेषण माध्यमों के प्रति जागरूकता औसत स्तर की है। उच्च स्तर वाले शिक्षकों की संख्या मध्यम एवं निम्न स्तर के सापेक्ष कम है।
2. विश्वविद्यालय स्तर पर कला–विभाग के शिक्षकों में आधुनिक सम्प्रेषण माध्यमों के प्रति जागरूकता के प्रति निम्न स्तरीय जागरूकता का प्रतिशत सर्वाधिक

है। उच्च जागरूकता वाले शिक्षकों का प्रतिशत बहुत ही कम है।

3. विश्वविद्यालय स्तर पर वाणिज्य विभाग के शिक्षकों में आधुनिक सम्प्रेषण माध्यमों के प्रति मध्यम स्तरीय जागरूकता परिलक्षित होती है।
4. विश्वविद्यालय स्तर पर विज्ञान विभाग के शिक्षकों में आधुनिक सम्प्रेषण माध्यमों के प्रति मध्यम स्तरीय जागरूकता तो सर्वाधिक है, यद्यपि उच्च स्तरीय जागरूकता का प्रतिशत निम्न स्तरीय जागरूकता के प्रतिशत से अधिक है।
5. विश्वविद्यालय स्तर पर अध्यापक शिक्षा के अधिकांश शिक्षक आधुनिक सम्प्रेषण माध्यमों के प्रति मध्यम स्तरीय जागरूकता रखते हैं और बहुत कम शिक्षकों में उच्च स्तरीय जागरूकता है।

अध्ययन की शैक्षिक उपादेयता

प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय के शिक्षकों में आधुनिक सम्प्रेषण माध्यमों के प्रयोग एवं शिक्षण को प्रभावी और रूचिकर बनाकर उच्च शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने में उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं।

प्रस्तुत अध्ययन से शिक्षण कार्य में आधुनिक सम्प्रेषण माध्यमों के प्रति शिक्षकों में उत्सुकता जाग्रत करने में मदद मिलेगी एवं शिक्षण तकनीक में सुधार भी अवश्य होगा। शिक्षक उचित माध्यमों का चुनाव कर अपने शिक्षण कार्य को निष्पादित करेंगे तो इससे निश्चित तौर पर शिक्षण प्रभावी होगा, शिक्षकों के ज्ञान को अद्यतन कर विषय–वस्तु को प्रभावी बनाया जा सकेगा, छात्रों की अधिगम क्षमता में वृद्धि होगी, छात्रों की अभिप्रेरणा, धनात्मक अभिवृत्ति में वृद्धि होगी। इस प्रकार छात्रों में सकारात्मक बदलाव भी लाया जा सकेगा तथा शिक्षण संस्थान एक अच्छे अधिगम केन्द्र के रूप में विकसित किये जा सकेंगे।

इस दिशा में प्रशासन का ध्यान आकृष्ट किया जा सकेगा कि अध्यापक–शिक्षा संस्थानों की संख्या तेजी से बढ़ रही है, पाठ्यक्रम में शैक्षिक तकनीकी को भी शामिल किया गया है किन्तु अधिकांश प्रवक्ता सभी आवश्यक सम्प्रेषण उपकरणों का प्रयोग करने में असमर्थ है। ये सम्प्रेषण माध्यम शिक्षकों का स्थान तो नहीं ले सकते, परन्तु उनमें व्यावहारिक शिक्षण कौशलों में धनात्मक वृद्धि अवश्य कर सकते हैं।

अध्ययन की सीमाएँ :–

1. प्रस्तुत अध्ययन केवल कानपुर महानगर तक ही सीमित है। इस भौगोलिक क्षेत्र को और बढ़ाया जा सकता है।
2. प्रश्नावली उपकरण के स्थान पर साक्षात्कार प्रविधि द्वारा प्रदत्तों का संकलन करने से और सार्थक परिणाम आ सकते हैं।
3. संसाधनों का अभाव न हो तो न्यादर्श को और बढ़ाया जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *प्रधान, विजेन्द्र (2012) : भारतीय शिक्षा में सूचना तकनीकी का महत्व, शोध शिक्षा और मूल्यांकन, जयपुर वा 4 इशू 40 मई पृ0 सं0– 53–54*
2. *थोर्राट, एस (2007) : पहुंच और गुणवत्ता पर उठते सवाल, योजना नई दिल्ली।*
3. *जैन, लाल एवं वशिष्ठ, के0सी0 (2011) शिक्षण एवं शोध अभियोग्यता, उपकार प्रकाशन।*
4. *मिश्र व शुक्ल (2009) व्यावसायिक सम्प्रेषण, साहित्य भवन, आगरा।*
5. *इण्टरनेट– शोधगंगा।*